© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

चाणक्य एक परिचय–चाणक्यविजयम्

ज्योति यादव
(शोधच्छात्रा)
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
गंगानाथ झा परिसर (आजाद पार्क)

संस्कृत नाटकों की परम्परा में चाणक्यविजयम् अपने ढंग का एक निराला नाटक है। संस्कृत नाटकों में प्रायः प्रणयचित्रण को ही विषयवस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है किन्तु भवभूति के उत्तररामचरित, विशाखदत्त के मुद्राराक्षस एवं आचार्य विश्वेश्वरदेवशर्मा प्रणीत चाणक्यविजयम् आदि इसके अपवाद है। **"एक एव भवेदंगी शृंगार वीर एव वा।"**[1] इस नाट्यशास्त्रीय नियम के अनुसार वीर एवं शृंगार को ही नायक में अंगीरस के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए। किन्तु **भवभूति ने इस सिद्धान्त की अपेक्षा करते हुए करुण रस को ही प्रधान रस के रूप में स्वीकार किया है**[2] तथा उत्तररामचरित में उसी का आद्योपान्त निर्वाह किया गया है। जबकि नाट्य सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए मुद्राराक्षस और चाणक्यविजयम् में वीर रस को अंगीरस माना गया है।

नाटककार आचार्यविश्वेश्वर के द्वारा विशुद्ध कूटनीतिक राजनीति को आधार बनाकर **चाणक्यविजयम्** का प्रणयन किया गया है। इसमें नन्दवंश का विनाश करने के अनन्तर भारत देश के महान् कूटनीतिज्ञ चाणक्य के द्वारा अपनी प्रतिभा एवं षड्यन्त्र के प्रयोग से बिना किसी रक्तपात के नन्दों के महामात्य पराक्रमी गुणसिन्धु को वश में करके मौर्य युग की स्थापना का वर्णन किया गया है। चाणक्यविजयम् में मौर्ययुगीन भारत की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं नैतिक दशा का यथार्थ चित्र खींचकर आदर्शोन्मुख यथार्थ की स्थापना की गयी है। इसमें घटनाओं का घात, प्रतिघात उसकी एकता और सार्थकता, चरित्र चित्रण एवं स्वामिकता ये सभी नाटकीय गुण विद्यमान हैं।

चाणक्यविजयम नाटक के पात्रों में वैविध्य दृष्टिगत होता है। इसके सभी पात्र प्रायः राजनीति से सम्बद्ध है। राजा, मन्त्री, एवं गुप्तचरों के अतिरिक्त भी जो पात्र इस नाटक में वर्णित है वे किसी न किसी रूप में राजनीति से सम्बद्ध है। इसमें 32 पात्रों का निरूपण किया गया है। नाटक में चाणक्य नायक एवं गुणसिन्धु प्रतिनायक है। कुछ चाणक्य के पक्ष में और कुछ गुणसिन्धु के पक्ष में। चन्द्रगुप्त चाणक्य का दृढ़भक्त शिष्य है, इसने मौर्यवंश की स्थापना की थीं।

चाणक्य इस नाटक के प्रधानपात्र हैं। इनके ही अन्य नाम, कौटिल्य एवं विष्णुगुप्त है। इन नामों की चर्चा स्वयं चाणक्य ने तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में चन्द्रगुप्त से वार्ता करते हुए अपने परिचय में कहा–

अहं विद्याव्रतो धीमन् करोमि शास्त्रसाधनम्।

कौटिल्य इति विख्यातश्चाणक्यो ब्राह्मणात्मजः।।[3]

प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में चाणक्य और कौण्डिन्य की वार्ता में चाणक्य की स्वयं को लक्ष्य करके कही गयी यह उक्त– **कौण्डिन्य : – (शिष्यं सादरं पार्श्वमानीय) मा मा भैषी पुत्रक ! एषोऽहं विष्णुगुप्तस्तिष्ठामि। ननु कौटिल्य जीवति किमास्ति भयकारणम्?।**[4]

चाणक्य की इन उक्तियों से यह ज्ञात हो जाता है कि ये अपर नाम आचार्य चाणक्य के ही हैं।

चाणक्य में वे सभी गुण विद्यमान है जो एक नाटक के नायक के लिए अति आवश्यक है। नन्दों का समूल नाश करने के बाद चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध के सम्राट के रूप में प्रतिष्ठित करता है। मौर्य साम्राज्य की राज्यलक्ष्मी का स्थैर्य ही उसका लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह पूर्णतः सन्नद्ध है।

भारतीय नाट्यपरम्परा में नायक के लिए जिन गुणों का होना आवश्यक बताया गया है, वे इस प्रकार हैं–

नाटक के नायक को नेता, विनीत, मधुर त्यागी, दक्ष, प्रिय बोलने वाला, आदि गुणों से युक्त होना चाहिए।[5] चाणक्य त्यागी, दक्ष, शुचि, वाग्मी, रूढ़वंश, स्थिर, बुद्धिमान, उत्साही, स्मृतिवान तथा प्रज्ञावान् है। वह दृढ़, तेजस्वी एवं शास्त्रज्ञ है। इस रूप में उसमें नायक के पर्याप्त गुण विद्यमान है। यद्यपि चाणक्य न तो विनीत है, न मधुर है, न ही प्रियभाषी है किन्तु जिस कार्य के लिए वह प्रवृत्त है उसके लिए विनीत, मधुर एवं प्रियभाषी होना दोष है गुण नहीं।

यथार्थ रूप से प्रथम सम्राट के निर्माता चाणक्य की गतिविधि ही आरम्भ से अन्त तक परिचालित दृष्टिगत होती है। उसी की नीतियाँ सफल हुई है। चन्द्रगुप्त मौर्य का व्यक्तित्व नायक के रूप में नहीं है क्योंकि उसकी सम्पूर्ण शक्ति चाणक्य पर आश्रित है। सम्पूर्ण कथानक का केन्द्र चाणक्य है। भले ही नाटक के अन्त में चन्द्रगुप्त, गुणसिन्धु के रूप में एक दृढ़ स्वामिभक्त बुद्धिमान मन्त्री को प्राप्त करता है, जिससे उसके साम्राज्य की राज्यलक्ष्मी सुस्थिर हो जाती है, पर चाणक्य को भी इस अवसर पर फलागम का विशेष लाभ हुआ है। अन्ततः उन्हें आत्मसंतोष मिलता है क्योंकि इसी समय चाणक्य की नन्दराज के प्रति की गयी प्रतिज्ञा–

चाणक्य – मोचयामि शिखां चेमां ज्वलन्तीं ब्रह्मतेजसा।
संवशे त्वयि संनष्टे ग्रान्थिष्यामि पुनश्चताम्।।[6]

पूर्ण हुयी–

चाणक्य– नन्दे हतेऽत्र संस्थाप्य मौर्यंचापि नृपासने।
पूर्णव्रतोऽस्मि सानन्दं पुनर्वध्नामि मे शिखाम्।।[7]

वस्तुतः चाणक्य को ही चाणक्यविजयम् नाटक का नायक स्वीकार करना तर्कसंगत तथ्य है।

चाणक्य का सबसे बड़ा गुण है, निःस्वार्थ भाव से लोक कल्याणकारी कार्य करना। चाणक्य के इस पक्ष को प्रस्तुत करने में विश्वेश्वर पूर्णतः सफल हुए हैं। **यथा–**

चाणक्य– लोकाहितार्थं मया राजनीतिर्गृहीता, न तु लोभो वा राजयसुखविलासोऽत्र कारणम्! विशेषतो नीति शास्त्राणां प्रयोगफलपरीक्षणंच मे गौणमुद्देश्यम्।[8]

चाणक्य अपने साध्य के प्रति सतत् जागरूक है तथा उसमें कार्य करने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है। वह एक महान् नीतिज्ञ है। चाणक्य को अपनी बुद्धिमत्ता पर पूरा भरोसा है। वह अपनी बुद्धि के वैभव से सब कुछ सम्पन्न कर लेता है। नन्दों के समूल नाश की उसने जो प्रतिज्ञा ली थी उसे वह अपनी अद्भुत बुद्धि की प्रखरता से ही पूर्ण करता है–

धर्मराज्यं प्रतिष्ठाप्य भारते श्रीगुणन्वितम्।
पूर्णव्रतोऽस्मि सानन्दं गच्छामि तपसे वनम्।।[9]

चाणक्य चाणक्यविजयम् में दृढ़प्रतिज्ञ कूटनीतिविशारद एवं महान् राजनीतिज्ञ के रूप में वर्णित है। उन्हें अपनें पुरूषार्थ के प्रति पूर्ण विश्वास है। चाणक्य वस्तुतः अपने कर्तव्य को ही कार्यासिद्धि का लक्ष्य मानता है। चाणक्य के पराक्रम का ही परिणाम है कि चन्द्रगुप्त मगध साम्राज्य के सिंहासन पर आरूढ़ हो सका है।

आचार्य चाणक्य किसी भी कार्य को उसके परिणाम तक निष्पन्न करता है। आरब्ध कार्य बीच में कदापि नही छोड़ता। नन्दों का विनाशकर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर भी वह शान्त नहीं हो जाता जब तक कि वह चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी को सुस्थिर करने के लिए नन्दामात्य गुणसिन्धु को चन्द्रगुप्त का अमात्य न बना दें, तब तक उसे विश्राम कहाँ ?

चाणक्य क्रोधी स्वभाव के साथ–साथ प्रकृति से उदार भी है। उन्होंने अपने क्रोध से एक ओर शत्रुओं का समूल नष्ट किया तो दूसरी ओर निरपराध प्राणियों एवं ब्राह्मण और औरतों की रक्षा भी की, उनके इस कथन से इस बात की पृष्टि भी हो जाती है–

चाणक्य– कौटिल्ये जीवति शासति च वसुधां चन्द्रगुप्तेऽत्र मौर्य्ये।
न कोऽप्याचरेदविनयं ब्राम्हणेषु नारीजनेषु च।[10]

आचार्य विश्वेश्वर के अनुसार चाणक्य के मन में अपने लिए कोई स्पृहा नही है। उनमें आलस्य का नाम नहीं है। चाणक्य त्याग की प्रतिमूर्ति है। वह राजश्री भोगविलास से निर्लिप्त नगर से बाहर एक छोटी सी कुटिया में रहतो हैं, यहीं उनकी असाधारण विभूति है।

चाणक्य प्रतिशोध एवं प्रतिहिंसा का अवतार है। इस नाटक में चाणक्य को उग्र एवं क्रोधी पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। जब कोई भी कार्य उनके मन के प्रतिकूल होता है तो वह क्रुद्ध हो उठते हैं। उनका क्रोधी स्वभाव कई जगह नाटक में व्यक्त हुआ है– उदा0– **यदि कोऽप्यशिष्टमाचरति। मातृजनेषु, तदा शूलेन स बध्यो भवेत्।**[11]

चाणक्य मनोविज्ञान का अद्वितीय वेत्ता है। वह अपने मन को जितना पहचानता है उतना ही दूसरे के मन को भी पहचानता है। गुणसिन्धु के गुणों को जितना वह समझता है सम्भवतः गुणसिन्धु भी अपने गुणो को नहीं जानता। वस्तुतः चाणक्य असाधारण मेधा सम्पन्न एवं गुणग्राही है। वह गुणसिन्धु की निःस्वार्थ स्वामिभक्ति को देखकर उसको चन्द्रगुप्त का अमात्य बनाना चाहता है, उनके इस कथन से उनकी यह अभिलाषा स्वतः सिद्ध हो जाती है–

असंशयं नीतिपराग्रगव्यः
स नन्दमन्त्री गुणवान विधिज्ञः।
सर्व्वार्थवेदी च गुणानुरागी
माङ्गल्यकैर्योजयते नरेन्द्रम्।।[12]

"विश्वसते नातिविश्वसेत्, अविश्वस्ते नैव विश्वसेत।" चाणक्य इस सिद्धान्त का अक्षरशः पालन करते है। चाणक्य सम्पूर्ण नाटक में अपनी योजनाओं का सूत्रधार स्वतः है।

चाणक्य में अद्भुत संगठनिक क्षमता विद्यमान है। उसकी कूटनीति की यह विशेषता है कि एक ही उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर कार्य करने वाले गुप्तचर एक दूसरे से अपरिचित रहते हैं। उनके अनुयायी उनकी लगन, दक्षता, कठोरता, जागरूकता, तथा लक्ष्य के प्रति एकाग्रता से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। चाणक्य की उच्चाकांक्षा ही उनकी उच्चाकांक्षा है। उनके मन में ऐसी भावना इसलिए है कि चाणक्य जो भी कार्य करते है वह अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए नहीं अपितु मौर्य साम्राज्य की स्थिरता के लिए करते हैं। इसीलिए उसने गुणसिन्धु को भी शत्रु नहीं माना, अपितु उसे भी अपने आदर्शों का पालक बना लेता है।

गुणसिन्धु जिस चाणक्य को प्रधान शत्रु मानता है पदे–पदे जिसके लिए कटुवचनों का प्रयोग करता है उसके निःस्वार्थ भाव को देखकर नाटक की समाप्ति के समय अपनी धारणा बदल देता है और चाणक्य की प्रशंसा करते हुए कहता है–

(कृतज्ञतावेगेन रूखलितकण्ठः)– धन्योऽस्मि। अहो, महाननुग्रहः। धन्यः कौटिल्यः, धन्यः कौटिल्यः[13]

सप्तम अंक में कौण्डिण्य और बालिका के द्वारा चाणक्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गयी है। चाणक्य की प्रशंसा करते हुए कहता है– **कौण्डिण्य– विचित्रमेतन्महतां चरित्रं**

चाणक्यविप्रो यदिह प्रकामम।
ब्राह्मण्यनिष्ठस्तपसा च युक्त
आसक्तिहीनो भजते हि राज्यम्।।[14]

अन्ततः– चाणक्य सद्वंश में उत्पन्न राजा न होकर एक ऐसा ब्राह्मण है जो विशाल साम्राज्य का प्रतिष्ठापक आचार्य है। विशाल साम्राज्य की स्थापना के पीछे उसका उद्देश्य है लोककल्याण। यथार्थ रूप से प्रथम सम्राट के निर्माता चाणक्य की गतिविधि ही आरम्भ से अन्त तक परिचालित दृष्टिगत होती है। उसी की नीतियाँ सफल हुई। सम्पूर्ण कथानक का केन्द्र चाणक्य है।

यद्यपि चाणक्य ने कई बार कठोर निर्णय लिए हैं जिन्हें अनैतिक भी कहा जा सकता है किन्तु उनके सारे कार्य नन्दों का विनाश एवं चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी की स्थिरता के लिए है। नन्द धनलोलुप थे वे जनता के लिए अभिशाप बन चुके थे, उनका पूर्ण विनाश आवश्यक था। चाणक्य का लक्ष्य महान था, वह भारत की अखण्डता चाह रहे थे उसकी सीमाओं का विस्तार करना चाह रहे थे।

इस प्रकार चाणक्य, चाणक्यविजयम् में आत्मविश्वसी, दृढ़प्रतिज्ञ, दूरदर्शी, पुरूषार्थी, बुद्धिशाली तथा कूटनीतिनिपुण रूप में चित्रित है। नाटककार की दृष्टि में चाणक्य में नन्दसाम्राज्य को समाप्त करने तथा मौर्य साम्राज्य को स्थिर करने का अद्भुत सामर्थ्य विद्यमान था।

सन्दर्भ सूची–

1– साहित्यदर्पण, षष्ठ परिच्छेद, सूत्र–10

2– एको रस करूण एव..... उ0र0च0– 3.47

3– चाणक्य विजयम्–तृतीय अंक–प्रथम दृश्य, श्लोक–1

4– चा0 वि0 – प्र0 प्र0 दृश्य –पृ0–5

5– दशरूपक – पृ0–2–1, 2

6– चा0 वि0 – 3. 2. श्लोक–3

7– चा0 वि0 – 7. 2. श्लोक–3

8– चा0 वि0 – 7. 2. श्लोक–1

9– चा0 वि0 – 4. 2. पृ0–38

10– चा0 वि0 – 6. 2 श्लोक–3

11– चा0 वि0 – 5. 3 पृ0 50

12– चा0 वि0 – 5. 2. श्लोक–1

13– चा0 वि0 – 7. 1. पृ0 64

14– चा0 वि0 – 7. 1. श्लोक–1, 2